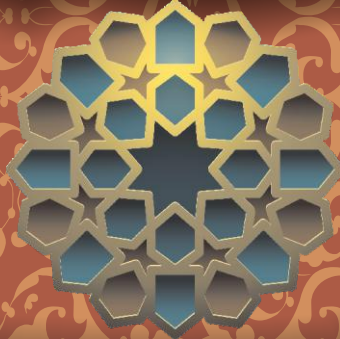


तक़दीसी दोहे

# वादी-ए-माह



यावर वारसी अजीजी नवाबी

Dabistan-E-Nawwabiya Aziziya Publications



دبستان نوابیہ عزیزیا



[www.dabistanenawwabiya.com](http://www.dabistanenawwabiya.com)



[dabistanenawwabiya@gmail.com](mailto:dabistanenawwabiya@gmail.com)

दोहों का मजमूआ

तक़दीसी दोहे

“वादी ए माह”

वादिए माहो कहकशाँ खुशी की फसलें बोए  
उनकी गली की खाक से इतनी रोशन होए

यावर वारसी अज़ीज़ी नव्वाबी

जुमला हुकूक बहक्के पब्लिशर महफूज

नाम किताब	: वादी ए माह (दोहों का मजमूआ)
नाम शायर	: यावर वारसी अजीज़ी नव्वाबी
इन्तिख़ाब	: नज्मुस्सईद, रिज़वान आरिफ़
तरतीब	: यावर वारसी अजीज़ी नव्वाबी
कम्पोज़िंग	: स्माईल ग्राफ़िक्स, चमनगंज, कानपुर
	मोबाइल न० : 9455306981
तादाद	: 500 (पाँच सौ)
सफ़हात	: 88
नाशिर	: दबिस्ताने नव्वाबिया अजीज़िया पब्लिकेशंज
मतबा	: स्माईल ग्राफ़िक्स, चमनगंज, कानपुर
कीमत	: 125/-रूपये
सने इशाअत	: 2023

: मिलने के पते :

आस्तानए आलिया नव्वाबिया,  
काज़ीपुर शरीफ़, पोस्ट मंडवा, ज़िला फतेहपुर (हसवा)  
यू०पी० (इण्डिया) पिन कोड - 212653

स्माईल ग्राफ़िक्स,  
105/219, तारा बिल्डिंग, चमनगंज, कानपुर-208001

: बराए राब्ला :

+919415494492

+919426268823

+918866222412

+919726880001

## इन्तिसाब

गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस ।  
चल खुसरौ घर आपने रैन भई चहूँ देस ॥



के नाम

यावर वारसी अज़ीज़ी नव्वाबी

## यावर की दोहा निगारी

सैय्यद मोहम्मद मुजीबुल हसन नव्वाबी  
ख़ानकाहे नव्वाबिया काज़ीपुर शरीफ,  
खागा, ज़िला फ़तेहपुर

क़दीम उर्दू शायरी इस हवाले से मतऊन रही है कि इसमें इलाक़ाई और मुल्की तहज़ीबो तमद्दुन के अनासिर बहुत कम नज़र आते हैं। इस ज़िम्न में मोतरिज़ीन का यह एतराज बजा है कि हम गुलो बुलबुल के फ़र्ज़ी अफ़सानए इश्क़ से महज़ूज होते हैं लेकिन आम की डाली पर बैठी कोयल की दर्द भरी कूक नहीं सुनना चाहते। इसके अलावा मशहूर दरयाओं के भी मुतबादिल पेश किए जाते हैं कि फुरात व जीहूँ के अलावा गंगा और जमना की लहरें हमारी शायरी को क्यों सैराब नहीं कर पायीं? बात यह नहीं है कि हिन्दुस्तानी तहज़ीबो तमद्दुन की अक्कासी क्लासीकी उर्दू शायरी में नहीं दिखाई पड़ती बल्कि बात तो यह है कि अगर कोई इस किस्म की कोशिश कर भी ले तो उसकी कितनी हौसला अफ़ज़ाई होती है? मसलन हज़रत मोहसिन काकौरवी का लाजवाब क़सीदा लामिया “सम्ते काशी से चला जानिबे मथुरा बादल” के साथ खुदाई फ़ौजदारों ने क्या सुलूक किया? उन्हें क़सीदे की तशबीब कुछ समझ में भी आई? जवाब होगा “बिल्कुल भी नहीं” मसअला यह है कि शायरी पर भी मज़हबी इन्तिहा पसन्द अफ़राद अपना तसल्लुत चाहते हैं और किसी भी इन्तिहा पसन्द तबके से आप होशो ख़िरद की बातों की तवक्को कैसे कर सकते हैं? हाँ तो बात चली थी उर्दू शायरी में मुल्की तहज़ीब की अक्कासी के बारे में। यूँ तो ‘जुम्बदे कलीदे बुत कदा दर दस्ते बरहमन’ की रिवायत क़दीम दौर से चली आ रही है लेकिन दौरे क़दीम की तख़लीकात में भी आपको बरगद और पीपल की छाँव नहीं मिलेगी। हाँ आपको सरवे सही और बेदे मजनुँ की बहारो ख़िज़ा ज़रूर दिखाई देगी। भला हो जदीद शायरों का जिन्होंने ख़ालिस ईरानियत से अपनी जान छुड़ाई

और यह साबित किया कि हम अब बग़ैर देखे ही किनारे आबे ख़कनाबाद व गुलगाशते मुसल्ला से लुत्फे ज़िन्दगी नहीं हासिल कर सकते । सिर्फ़ यही नहीं कि जदीद शोअरा ने हिन्दी देवमाला और हिन्दुस्तानी तहज़ीबो सक़ाफ़त और दीगर रिवायात को कहीं रास्त अन्दाज़ में तो कहीं इस्तिआराती और तलमीही पैराए में नज़्म किया है बल्कि हिन्दी की एक सिन्फ़ दोहा की खुशक होती रगों को भी ताज़ा ख़ून फ़राहम किया है । दोहा वह खुशकिस्मत सिन्फ़े शायरी है कि जब सूफ़ियाए किराम ने हिन्दुस्तान की मक़ामी बोलियों में शेरगोई का आगाज़ किया तो सबसे पहले यही सिन्फ़ थी जिसपर उनकी निगाह ठहरी । उर्दू ज़बानो अदब की कुतुबे तारीख़ में हुज़ूर बाबा फ़रीद उद्दीन मसऊद गंजे शकर का यह दोहा मिलता है -

साई सेवत गल गई मास न रहिया देह ।

तब लग साई सेवसाँ जब लग होसुँ केह ॥

हज़रत अमीर खुसरौ के दो मिसरों को ज़्यादा तर लोगों ने महज़ हिन्दवी की एक बैत लिखा है लेकिन ग़ौर कीजिए तो यह भी दोहा ही है -

गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस ।

चल खुसरौ घर आपने रैन/सांझ भई चहूँ देस ॥

यह दोहा उसी अड़तालीस मात्राई अर्ध सम (नीम मसावी) छंद में है जिसकी मुतबादिल उर्दू के अरज़ की यह बहूर है और इस बहूर को दोहों के लिए मुखतस समझा जाता है । अरकान हस्बे ज़ेल हैं -

फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ायलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ाअ

दोहों के लिए किसी भी ज़माने में मज़ामीन की कोई क़ैद नहीं रही । पुराने दोहों को पढ़ लीजिए आपको उनमें इलाहियात, तसव्वुफ़ व इरफ़ान से मुताल्लिक़ दीगर मौजूआत, पन्दो नसाएह, हिकायते इश्को आशिकी और फ़िराक़िया नीज़ फ़काहिया मज़ामीन भी मिलेंगे । अब सवाल यह है कि नातो मनाक़िब के अब्वली नुकूश दोहों में कहाँ से हासिल किये जाए ? इसका जवाब हमें मीराँ जी शम्सुल उश्शाक़ (मुतव्वफ़ी 1557 ई०) के इस दोहे में मिलता है -

अल्लाह मुहम्मद अली इमाम दायम इन सुँ हाल ।

सब ख़ासों में अल्लाह अल्लाह तो रक्खूँ क्या कमाल ॥

(लफ़ज़ ‘क्या’ के अलिफ़ में इख़फ़ा है इसे झटके के साथ पढ़िये वरना वज़्ज

नाहमवार हुआ जाता है)

साबित हुआ कि दोहे को नातो मनाकिब के पैराहने खुशरंग मिलने में देर नहीं लगी और सूफ़ियाए किराम ने इस सिन्फ़ में भी वही कुछ लिखा जो उनकी ग़ज़लों और मसनवियों का ख़ास्सा है। इस सिन्फ़ में यह तमाम खुसूसियात होने के बावजूद उर्दू शायरी में ग़ज़लगोई के आगे दोहा निगारी इस क़दर फलने फूलने न पाई जिसकी यह हक़दार है। बहरहाल, देर सवेर ही सही मगर हक़ ब हक़दार रसीद। दौरे मौजूद और माज़ी क़रीब में तक़दीसी दोहे कहने वालों ने ख़ूब नातिया दोहे कहे, जिनकी झलकियाँ हिन्दो पाक के अदबी रसायल व जरायद में नज़र आती रही हैं लेकिन हमारी मालूमात के मुताबिक़ अब तक तक़दीसी दोहों पर मुशतमिल कोई मुस्तक़िल किताब नहीं देखने में आई यानी न मुतफ़रि़क़ शोअरा के नातिया/मनक़बती दोहे और न किसी एक शायर के तक़दीसी दोहों का मजमूआ बर्रें सगीर हिन्दो पाक में शाए हुआ। दुआएँ दीजिए जनाबे यावर को कि उन्होंने कम फुर्सती और नासाज़िए तबअ के बावस्फ़ एक मुनफ़रिद और मुतनव्वे मजमूआ शाए किया है। वादी ए माह की सैर आप तनहा ही कीजिए लेकिन इससे कब्ब आपको थोड़ा बहुत लवाज़मा भी फ़राहम किया जा रहा है कि आख़िर जिस वादी में आप उतर रहे हैं उसके मुक़ामात से तो आगाह हो जाएँ। दोहा निगारी के हवाले से बिलइजमाल गुज़िश्ता सुतूर में ज़िक्र कर दिया गया है और इसकी बहूर के मशहूर अरकान भी लिख दिये गये हैं। अब कोई कहे कि फिर इस दोहे के अरकान के बारे में क्या इरशाद है -

इलाज करना और दुआ बस है एक उपाए।

मेरे खुदा का हुक्म ही शिफ़ा अता फ़रमाए ॥

अरकान इसके यह हैं -

फ़ऊलो फ़ेलुन फ़ायलुन, फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ाअ

फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ायलुन, फ़ऊलो फ़ेलुन फ़ाअ

इन अरकान को शुमार कर लीजिए तादाद 48 बनती है और दोहों में इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि मिसरा फ़ेलुन से शुरू हो रहा है या फ़ेल और फ़ऊल से। जो दोहा सह हरफ़ी रूक्न फ़अल/फ़ेल से शुरू होता है उसे विषम क़लातमक़ दोहा कहते हैं और जिस दोहे की इब्तिदा में चार हरफ़ी रूक्न फ़ेलुन आता है इसे सम क़लात्क़म दोहा कहते हैं और जो दोहा फ़ऊल

के वज़्ज से शुरू होता है उसके लिए चन्डालनी दोहा नामी डरावनी इस्तिलाह मुस्तामल है। यह बात भी काबिले ज़िक्र है कि दोहे में चार चरण यानी हिस्से होते हैं और उसका पहला और तीसरा जुच्च विषम (ताक्) चरण कहलाता है। दूसरे और चौथे जुच्च को सम चरण (जुफ्त) कहते हैं। ताक् जुच्च में तेरह और हिस्सए जुफ्त में ग्यारह मात्राएं होती हैं। और हाँ जब दोहे के दोनों अजज़ा एक सत्र में लिखे जाएं तो उसे दल कहा जाता है। दल को ही अगर मिसरा मान लिया जाए तो कोई मुजायका नहीं और यह तो कोई भी समझ सकता है कि दोहे के दोनों मिसरे गज़ल के मतला की तरह हम काफ़िया होते हैं। अगर यह बातें ज़हन नशीन हो गई हों तो दर्ज बाला दोहे के ज़ेल में दिये गये अरकान के हुरूफ़ उनके अजज़ा के मुताबिक़ दोबार शुमार कीजिए। मात्राएं क्या होती हैं यह आप बख़ूबी समझ जाएंगे। इन उमूर को ज़हन में रखने के बाद अगर आप इल्मे अररूज़ की काम चलाउ हद तक भी जानकारी रखते हैं तो मौजूं और ग़ैर मौजूं दोहे की शिनाख़्त में आपको कोई कठिनाई नहीं होगी।

अब हम वादी ए माह की जानिब लौटते हैं। हज़रत यावर ने सिर्फ़ दोहे की हैअत को ही नहीं इस्तेमाल किया बल्कि उसके लिसानी मिजाज़ का भी भरपूर ख़याल रक्खा है। आपको इस किताब में कहीं भी सक़ील अलफ़ाज़ नज़र नहीं आएंगे। दोहे जैसी सिन्फ़ जिसका मक़सद ही यह था कि अवाम तक अपनी बात पहुँचाई जाए वह भला भारी भरकम अलफ़ाज़ की मुतहम्मिल क्योंकर हो सकती है। अगर जिद्दत तराज़ी की बात की जाए तो यावर साहब दोहे लिखते हुए भी अपनी लै में नज़र आते हैं। वादी ए माह की कहकशाओं में आपको यह मुतलक़ एहसास नहीं होगा कि इस सिन्फ़ में मुसन्निफ़ की यह पहली काविश है। मैंने यावर साहब के दोहों में ज़बाने सादा बरते जाने की बात की है तो फिर सुबूत भी मुझे ही देना है -

बात छिड़ी सरकार की मेरे दिल की ओर ।

इससे कुछ मतलब नहीं साँझ हुई या भोर ॥

एक और दोहा पढ़ लीजिए सिर्फ़ सलासते ज़बान ही नहीं बल्कि नुदरते ख़याल की भी दाद दीजिए -

जैसे चूमे आसमाँ तानसेन की तान ।

सुनते ही नामे नबी उड़ने लगे अरमान ॥



इससे जायद मिसालें पेश कर दूँ तो आपके लिए क्या रह जाएगा ? अलगरज़ दोहा अवामी चीज़ है और इसे ग़ैर उर्दू दाँ तबके तक पहुँचाने के लिए हिन्दी रस्मुल ख़त में भी तबअ किया जा रहा है । अब देखना यह है कि इस किस्म की और कोई किताब शाए होती है या नहीं । हाँ मगर अव्वलीयत का सेहरा तो जनाबे यावर के सर ही रहेगा ।



## दोहा और मैं

दोहा हिन्दी ज़बान की वह सिन्फे सुखन है जिसके बत्न में हर किस्म के मज़ामीन मौजूद हैं। कबीर दास और दीगर कवियों ने अवामुन्नास की इसलाह के लिए ख़ूब-ख़ूब दोहे कहे। दोहे आसान ज़बान में कहने का सबब यही था कि उनकी रसाई अवाम तक हो सके। अगर ऐसा न किया जाता तो उसका मक़सद ही फ़ौत हो जाता।

तालीम के दौरान मैंने भी दूसरे तलबा की तरह दोहों का मुतालआ किया लेकिन उस वक़्त मक़सद ज़ाहिर है इम्तिहान में कामयाबी से ज़्यादा कुछ न होता था लेकिन जैसे-जैसे शऊर बेदार होता गया मुझे दोहे की सिन्फ़ से एक अजीब सा उन्स होता गया। मुझे इसकी बहर बहुत अच्छी लगती थी, पढ़ने में बड़ा लुत्फ़ आता था। जब मैंने शेरो सुखन की दुनिया में क़दम रक्खा तो मुझे दोहा पढ़ने में मज़ीद लुत्फ़ मिलने लगा। इस दौर में मैंने हज़रत अमीर खुसरौ के दोहों से भी हज़ हासिल किया। हज़रत अमीर खुसरौ रहमतुल्लाह अलैह के दोहों के मुतालआ का यह भी असर हुआ कि मैं एक आध मिसरे कहने लगा लेकिन बाक़ायदा दोहा निगारी का कभी ख़याल न आया।

2023 ई० के इब्तिदाई अय्याम में वह दिन मेरे लिए यादगार बन गया जब मैंने पहली बार दोहा कहा। मुझे यह तो याद नहीं कि वह कौनसा दोहा था लेकिन फिर यूँ हुआ कि बहुत जल्द कुछ दोहे मेरी ज़म्बीले किरतासो कलम के सुर्पुद हो गए।

मुस्तक़िल बीमारी ने मुझे इस मैदान में बहुत आगे तक जाने न दिया। अब ऐसा लगता है कि उम्र की इस मंज़िल पर शायद मैं इससे ज़्यादा काम न कर सकूँ। लिहाज़ा फ़ैसला किया कि जो कुछ दोहे हो गए हैं उन्हें किताबी शक़्ल में पेश कर दूँ।

एक और बात बयान करता चलूँ। मैंने जब से शेरो सुखन की दुनिया में क़दम रक्खा है जब भी किसी नई बहर या सिन्फ़ को इस्तेमाल करना चाहा तो हमेशा सबसे पहले नातो मनाकिब में ही इस्तेमाल किया। मैं समझता हूँ कि यह मुझपर मेरे आक़ाए करीम अलैहिस्सलातो वत्तसलीम

और बुर्जुगाने दीन रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन का मख़सूस करम है इसके सिवा कुछ नहीं ।

दोहा निगारी में मेरी सबसे ज़्यादा हौसला अफ़ज़ाई मेरे मोहसिन व करम फ़रमा हज़रत सैय्यद मोहम्मद नूरूल हसन नूर नवाबी अज़ीज़ी, ख़ानकाहे आलिया नवाबिया अबुल उलाइया काज़ीपुर शरीफ़ खागा ज़िला फ़तेहपुर (हसवा) ने की बल्कि यूँ कहूँ तो बजा होगा कि वह हमेशा मुझे शेरगोई खुसूसन नात व मनकबत निगारी के लिए इंगेज़ करते रहते हैं । इस बीमारी के आलम में भी मैं जो शेरगोई कर रहा हूँ इसकी एक बड़ी वजह उनकी हौसला अफ़ज़ाई ही है । अल्लाह उनकी इज़्जतो अज़मत में रोज़ अफ़ज़ूँ इज़ाफ़ा फ़रमाये । आमीन ।

हज़रत सैय्यद मुहम्मद मुजीबुल हसन मुजीब नवाबी अज़ीज़ी ने बड़ा करम किया कि मेरी दोहा निगारी पर एक मबसूत मज़मून सुपुर्वे क़लम करके मुझे इस्तिनाद बख़शा । मैं ब समीमे क़ल्ब उनका शुक्रिया अदा करता हूँ और दुआगो हूँ कि अल्लाह तआला उन्हें अपने मख़सूस करम से नवाज़े । आमीन ।

मैं अपने तमाम कारिईन, दोस्तों, अज़ीज़ों, रिशतेदारों, अपने बेटे बेटियों अपनी अहल्लिया और खुसूसन मौलाना कारी मुहम्मद कासिम हबीबी बरकाती का शुक्रगुज़ार हूँ कि वह मेरी हर तख़लीक़ को सीने से लगाते हैं दिल में जगह देते हैं और मुझे दुआओं से नवाज़ते हैं ।

मेरी यह काविश “वादी ए माह” भी हमेशा की तरह दबिस्ताने नवाबिया अज़ीज़िया पब्लिकेशन्ज़ काज़ीपुर शरीफ़ खागा फ़तेहपुर (हसवा) के प्लेटफ़ार्म से होती हुई आपके हाथों की ज़ीनत है। अल्लाह पब्लिकेशन को दिन दूनी रात चौगनी तरक़ी अता फ़रमाये । आमीन

मेरी बस एक आरजू है कि मेरी इस काविश को मेरे आका करीम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम और बुर्जुगाने दीन रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन कुबूल फ़रमा लें और मेरा रब इसे मेरी उखरवी निजात का ज़रिया बनाये । आमीन ।

यावर वारसी अज़ीज़ी नवाबी

मेरा रब ही जानता अपने सारे काम ।  
शाम को कर दे सुब्ह वो सुब्ह को कर दे शाम ॥

या अल्लाहो या हकम या नाफे या नूर ।  
दिल है बिछा दर पर तेरे सर ख़म तेरे हुज़ूर ॥

नाम तेरा अल्लाह है सिफ़त तेरी रहमान ।  
अफ़वो मआफ़ी दरगुजर यारब तेरी शान ॥

कोहे फ़ारँ है तेरा तेरा कोहे तूर ।  
जन्नत दोज़ख़ हैं तेरी तेरे ग़िलमाँ हूर ॥

इलाज करना और दुआ बस है एक उपाय ।  
मेरे खुदा का हुक्म ही शिफ़ा अता फ़रमाए ॥

●  
दिल के धड़कने की सदा करती है तसलीम ।  
आमदो शुद अनफ़ास की फ़ज्जे रब्बे करीम ॥

●  
यारब तुझसे है दुआ कर दे बेड़ा पार ।  
मसकन खुशियों का बने मेरा घर संसार ॥

●  
सदके में सरकार के लुत्फ़ो इनायत भेज ।  
दीनी बच्चों के लिए अपनी रहमत भेज ॥

●

---

---

बिस्तर मेरा ख़ाक है परदा मेरा टाट ।  
उतरी यारब ज़िन्दगी रंजो अलम के घाट ॥

ख़्वाब वो देखूँ एक दिन मेरे रब्बे क़दीर ।  
शहरे नबी की दीद ही जिसकी हो ताबीर ॥

नात निगारी में मुझे होना है मारुफ़ ।  
मेरे खुदा अफ़कार को मेरे कर मसरुफ़ ॥

मरने से पहले कर अता मुझको ये सौगात ।  
माँग रहा हूँ ऐ खुदा ! तैबा की एक रात ॥

तुर्की शाम और सीरिया देख के सब घबराए ।  
 यारब ऐसा ज़लज़ला अब न कहीं भी आए ॥

चाहने वालो से तेरे दुनिया रक्खे बैर ।  
 माँग रहा हूँ मेरे रब तुझसे सबकी ख़ैर ॥

ईसा का एलान है आएगा ऐसा नूर ।  
 कुफ़्र की और इलहाद की शब होगी काफूर ॥

छेड़ी जब सरकार ने रहम दिली की जँग ।  
 खाक ओढ़ी और सो गए जुल्म के सब औरंग ॥

चाहे जैसा वक़्त हो जैसे हों हालात ।  
गुम्बदे ख़ज़रा की तरफ़ देखूँ मैं दिन रात ॥

रहमत की नज़रों से जब देखेंगे सरकार ।  
रंजो ग़म मिट जायेंगे होगा बेड़ा पार ॥

गुम्बदे ख़ज़रा नाम का हरा हरा है फूल ।  
गोद में जिसकी मह्वे ख़्वाब आका मेरे रसूल ॥

चाँद सितारों की डगर चलते रब के हबीब ।  
उन के दर का हूँ गदा इतना अच्छा नसीब ॥



इसयां का दफ़्तर खुला हशर का है हंगाम ।  
कर दें इशारा मुस्तफा बना दें मेरा काम ॥

उनका रौज़ा देख कर आँखें हैं सरशार ।  
क्या है उस से भी हसीं जन्नत मेरे यार ॥

यादे मदीना आज भी देती है झकझोर ।  
फिर से जाने के लिये दिल करता है शोर ॥

सिद्को सफा और खुल्क की पहने हुए दस्तार ।  
बारा रबीउन नूर को आए मेरे सरकार ॥

उन का मकां अर्शे बरीं उनके गदा जिबरील ।  
उनकी सारी मंजिलें उनके सारे मील ॥

बात छिड़ी सरकार की मेरे दिल की ओर ।  
इससे कुछ मतलब नहीं सांझ हुई या भोर ॥

दिल के नाजुक छोर पर लगे जो कोई तीर ।  
उनके कूचे की हवा बनती है अकसीर ॥

सब से अच्छी शख़्सियत मेरे शहे अबरार ।  
कोई न रद कर पाएगा मेरा दावा यार ॥

उनकी मरज़ी से जुड़े रब की रज़ा के तार ।  
सोचो क्या हैं मुस्तफ़ा सोचो मेरे यार ॥

फ़िर से कहो हाँ फिर कहो बार-बार दोहराओ ।  
इस्में नबी की रोशनी दुनिया में फैलाओ ॥

दुनियां भर की उलझनें घेरें हैं सरकार ।  
बिनती है ये आपसे कर दें बेड़ा पार ॥

बिखरा देगी हर तरफ नाते नबी तनवीर ।  
मेरे ग़मखाने की भी बदलेगी तसवीर ॥

आशिके शाहे दोसरा सारे अच्छे लोग ।  
इनके दुशमन होते हैं कैसे कैसे लोग ॥

●  
फूल बिछा कर खाक पर कहता हरसिंगहार ।  
नात है मेरी जिन्दगी नात मेरा सिंघार ॥

●  
जो है हबीबे किवरिया तैबा की है शान ।  
नूर है खाकी जिस्म वह कहता है कुरआन ॥

●  
मुझको कहाँ मालूम था होगी कैसे कुबूल ।  
उनके सदके हो गई मेरी दुआ मकबूल ॥

●

---

---

नात कही है शौक़ से आका करें पसंद ।  
काश हो ऐसा और दिल पाए खुशी दो चँद ॥

आपकी चशमे लुत्फ़ से रह न सकेंगे दूर ।  
आका दर पर हैं खड़े दुनिया के मजबूर ॥

ज़िक्रे नबी के हर तरफ़ जलते रहें चराग़ ।  
जाए उजाला दूर तक रौशन रहें दिमाग़ ॥

हुज़ूर उक़बा हैं मेरी दुनिया मेरी हुज़ूर ।  
रंजो अलम हैं इस लिये मुझसे काफी दूर ॥

होते नहीं हल मसअले किया बहुत ही गौर ।  
एक निगाहे लुत्फ हो मेरे आका और ॥

गुम्बदे खज़रा के मकी रब के पयम्बर आप ।  
खल्के खुदा के वास्ते हादी-ओ रहबर आप ॥

जैसे चूमे आसमां तान सेन की तान ।  
सुनते ही नामे नबी उड़ने लगे अरमान ॥

मेरे आका मुस्तफा सारे जहाँ की जान ।  
खुल्को मुहब्बत में हुए सबसे बड़े धनवान ॥

चाँद सितारों के दिए जलते उनके द्वार ।  
वो हैं मुहम्मद मुस्तफा नबियों के सरदार ॥

बार-बार मज़मून ये कलम करे तहरीर ।  
नूर सरापा आप हैं कैसे बने तस्वीर ॥

हफ़ों नवा हुसने नबी कर न सके जंजीर ।  
सबके आजिज़ हैं कलम ग़ालिब हो या मीर ॥

चाँद के दो टुकड़े करें बदलें वो तकदीर ।  
उनकी मरज़ी से बने शाख़े शजर शमशीर ॥

उनका कहा रब का कहा कहता है कुरआन ।  
अक्लो ख़िरद की सुन न तू उनका कहना मान ॥

उनके लिये क़द-जाअकुम आया है मज़मून ।  
उनकी अज़मत का बयां यासी, ताहा, नून ॥

कुफ़ की शमशीरें गिरीं टूट गए सब तीर ।  
उट्ठी निगाहे मुस्तफा फैल गई तनवीर ॥

जब से बसाया आसमां जब से पाया वजूद ।  
सारे मलाइक हर घड़ी पढ़ते रहें दुरुद ॥



ज़िक्रे शहे कौनैन है सबसे अच्छा गीत ।  
बात ये मेरी याद रख मेरे मन के मीत ॥

पत्थर-पत्थर ज़िन्दगी करने वाले लोग ।  
उनके सदके हो गए खुशहाली के योग ॥

तेरा बेटा आमना सर ता पा है नूर ।  
भागे उसके नाम से तेरी बखती दूर ॥

रहमत उनका ताज है लुत्फो करम पहचान ।  
करते रहना दर गुज़र आका की है शान ॥

आका का किरदार है निकहते आलम ग़ीर ।  
खींच सको तो खींच लो खुशबू की तसवीर ॥

जिनको गुरबत के सबब हाथ न कोई लगाए ।  
आका की आगोश में वो भी बच्चे आए ॥

इश्के नबी के जाम से संग बने अनमोल ।  
भूले फितरत ख़ार सी फूल बने मंगोल ॥

पेड़ इशारे पर चले संग करे तसदीक ।  
ऐसे मेरे सरकार हैं कर लो तुम तहकीक ॥

उनके इशारे पर चले उनका गदा कहलाए ।  
सूरज उनके वास्ते पीछे पलट कर आए ॥

दुनिया में सरकार का दीवाना कहलाओ ।  
हश्र में सूए खुल्द भी उनके पीछे जाओ ॥

ज़ौजा उनकी आयशा फातमा उनका फूल ।  
वह हैं हबीबे किबरिया मेरे प्यारे रसूल ॥

आयशा माँ के ताजे सर जाने ख़दीजा आप ।  
फातमा ज़हरा के पिदर मेरे आका आप ॥

---

---

मख़मल जैसा बोरिया रेशम जैसा टाट ।  
सबसे अलग सबसे जुदा शहर की उनके हाट ॥

दुनिया भर से हो गया दिल अब मेरा उचाट ।  
आका अपने शहर में कुटिया कर दें एलाट ॥

कूए नबी के रात दिन आँखें देखें ख़्वाब ।  
काश यही हर पल कहें मेरे सभी अहबाब ॥

इश्के नबी का नूर है सीने में मौजूद ।  
ताक रही है उस तरफ़ तीरा शबी बेसूद ॥

गुम्बदे ख़ज़रा के तले पाऊँ अगर इक शाम ।  
आए यकी की रौशनी भागें सब औहाम ॥

दशते तमन्ना पर मेरे ख़ूब करम बरसाए ।  
आखें जब भी बन्द हों नज़र मदीना आए ॥

गुम्बदे ख़ज़रा और मैं जैसे चाँद चकोर ।  
आँखें कहती हैं मेरी काश न हो अब भोर ॥

ग़ैब अताई आपको हासिल है सरकार ।  
अपने अमल से जा बजा किया है ये इज़हार ॥

शाहे उमम एहसास का पहने हैं मलबूस ।  
सबके दर्दों कर्ब को करते हैं महसूस ॥

रब के जो महबूब हैं जिनकी सारी खुदाई ।  
तकिया उनका ईंट का बिस्तर टूटी चटाई ॥

देख के उनका आईना अपनी हकीकत जान ।  
तुझमें छुपा हैवान है या कोई इंसान ॥

हफ़ों नवा का काफ़ला पहुँचा नबी के द्वार ।  
इज्ज़ का करने के लिये आका से इज़हार ॥

उनका बिस्तर बोरिया उनका तकिया ईट ।  
राज करें कौनैन पर पहने हलकी छीट ॥

बात है नाजुक फूल सी हर्फ़ गुहर अनमोल ।  
मोम बना दें संग को उन के मीठे बोल ॥

आईना कुरआन का उनकी सुबहो शाम ।  
उनकी पूरी ज़िंदगी हर्फ़े हक़ के नाम ॥

उनकी मिदहत रात दिन मेरा है मक़सूद ।  
कैसे होगी कामरां फ़िक्र मेरी महदूद ॥

जकड़ के रस्सी से बदन करके मुझे मजबूर ।  
पाँव में बेड़ी डाल के ले चल उनके हूजूर ॥

ख़त्मे नुबूवत हो गई मेरे नबी के बाद ।  
कोई न आएगा नबी मेरे नबी के बाद ॥

रौशन है ये किस कदर सीरत का अध्याय ।  
कैदी की तकलीफ भी उनसे न देखी जाय ॥

जैसे भी रक्खें मुस्तफा मुझको है मन्जूर ।  
मेरी ये है आरजू उनसे ना जाऊँ दूर ॥



बद्रो उहद अहज़ाब या ख़ैबर की हो जंग ।  
वहाँ भी आका थे मेरे रहमो करम के संग ॥

फतहे मक्का की घड़ी अहले ख़िरद हैरान ।  
आम मुआफ़ी का हुआ आका का एलान ॥

बस्तए जंजीरो रसन करके मेरे यार ।  
जल्दी मुझको ले के चल पेशे शहे अबरार ॥

कहता ज़बाने हाल से हर किरमके शब ताब ।  
सरवरे दीं के फैज़ से जिस्म हुआ महताब ॥

ज़ीस्त के जैसे मील हों जैसे हों फरसंग ।  
मेरी एक एक सांस हो नाते नबी के संग ॥

चलते रहना चाहिए सूए शहरे रसूल ।  
यूं करने से दोस्तो ज़ीस्त बनेगी फूल ॥

रोते रहना रात दिन शहरे नबी से दूर ।  
मेरे बस में कुछ नहीं कितना हूँ मजबूर ॥

तैबा तूने डालदी पैरों में जंजीर ।  
वरना ऐसी थी कहाँ मेरी ये तकदीर ॥

मँज़र मेरे शहर का जैसे हो तेज़ाब ।  
आँखों की है आरजू शहरे नबी का ख्वाब ॥

हर दुनिया की है ख़बर मानो मेरे यार ।  
ज़र्ज़र तैबा का है ये पढ़ लो ये अखबार ॥

तैबा के एक मोड़ पर बैठा एक मज़दूर ।  
देखे हसरत से उसे जन्नत की एक हूर ॥

हुई बहुत हैं लगज़िशें हुई बहुत तक़सीर ।  
शहरे नबी की साअतो ! करलो मुझे जंजीर ॥

ख़ाके मदीना चूमता शाम को आकर चाँद ।  
रौशन उसके बाद हो दामन भर-भर चाँद ॥

हिजरे मदीना के सबब आया ये हंगाम ।  
हर दम रोना पीटना इश्क़ का ठहरा काम ॥

दिल में मेरे आबाद है उनका दयारे ख़ैर ।  
मेरी तमन्ना रात दिन करती वहाँ की सैर ॥

हुस्न में अपने बे बदल रोशन और मसउद ।  
हर मोमिन के दिल मे है शहरे नबी मौजूद ॥

सारे शहरों से हसीं सारे जहां का चैन ।  
आँख का मेरी नूर है शहरे शहे कौनैन ॥

गुम्बदे खज़रा से रवां नूर का दरिया देख ।  
दिल की आँखें खोल के क्या है मदीना देख ॥

यादे मदीना की घड़ी माँ की है आगोश ।  
जिसको मुकद्दर से मिले हो जाए मदहोश ॥

तुझसे है ये इल्लिजा तैबा की तनवीर ।  
सीने में पेवस्त कर तरकश के सब तीर ॥

धूप लगेगी चाँदनी संग लगेगा फूल ।  
खुल्द अगर हो देखनी देखो शहरे रसूल ॥

टूटी फूटी रौशनी टूटी फूटी रात ।  
ख्वाबे मदीना जाग जा नूर की कर बरसात ॥

जन्नत का एहसास दे शहरे नबी की भोर ।  
रक्स तबीयत यूँ करे जैसे नाचे मोर ॥

सिद्को सफ़ा का आईना आका के हैं यार ।  
यानी मेरे बूबक्र हैं इश्क़ का एक अवतार ॥

दीन की वुसअत के बने इनसे ही असबाब ।  
अद्ल का और इंसाफ का उमर बने महताब ॥

इश्के शहे कौनैन ही जिनका है ईमान ।  
लक़ब से जुन्नूरैन हैं नाम से हैं उसमान ॥

नाम अली शरे खुदा और हैदरे क़रार ।  
ख़ौफ़ से कांपे कुफ़्र के सारे ही सरदार ॥

अली-अली करते रहो दिन हो या हो रैन ।  
ज़िक़रे अली से पाओगे दामन भर का चैन ॥

नामे अली मेरा तीर है नाम अली तलवार ।  
सोच ले ज़ालिम सोच ले होगी तेरी हार ॥

करते हैं शामों सहर अली-अली का विर्द ।  
है जाने शमसो क़मर अली-अली का विर्द ॥

अली के बेटों का गदा होना मेरी शान ।  
ताज मेरे सर का यही यही मेरी पहचान ॥

देखे असगर की हर्सी देखे चलता तीर ।  
जो भी जाये करबला बन जाए तसवीर ॥



आले नबी के इश्क़ की पाओं में है जंजीर ।  
तुझ पर मैं सौ जान से फ़िदा मेरी तक़दीर ॥

●  
मेरे आका ने कहा जो हैं शहे कौनैन ।  
जन्नत के दो फूल हैं मेरे हसन हुसैन ॥

●  
एक-एक मिसरा इश्क़ का लगता है दीवान ।  
क्या-क्या नातें कह गया आका का हस्सान ॥

●  
उनके सहाबा हैं के हैं रौशन तारे सोच ।  
उनके जमालो हुस्न को अक्ल के मारे सोच ॥

●

---

---

बाग़े विलायत के शजर सब हैं सायादार ।  
फेज़ उठाते हैं सभी अपने हों या अग़्यार ॥

अब्दुल कादिर के क़दम वली की गरदन पाए ।  
उनकी गली का हर गदा आरिफ़े हक़ कहलाए ॥

हरफ़े हक़ की रौशनी जाने दीने मतीन ।  
धड़कन अहले इश्क़ की ख़्वाजा मोईन उद्दीन ॥

बाँट रहा है जन्नतें एक टके के मोल ।  
आशिक़े शाहे दोसरा एक दाना बहलोल ॥

जब भी पूछूँ बस यही कहता है इदराक ।  
सारे वलयों के वली मेरे वारिस पाक ॥

इश्के नबी का आईना ज़ीस्त के सारे बाब ।  
बज़्मे विला का चाँद हैं मेरे शहे नव्वाब ॥

शब भर ज़ौको शौक से करके इबादत सोच ।  
क्यों दी है अल्लाह ने शबे बराअत सोच ॥

बात ये मेरी मान ले तू जो नहीं आगाह ।  
शबे बराअत है तेरी बख़्शिश की एक राह ॥

बाग़े इनायातो करम रहमत का गुलदान ।  
फज़्ले रब से मैंने फिर पाया है रमज़ान ॥

फूल खुशी के खिल उठे सब पे हुआ फ़ैज़ान ।  
नूर की लेकर बारिशें आया है रमज़ान ॥

इफ़्तारो सहरी की है चारों जानिब धूम ।  
रात में दिन की रौशनी होती है मालूम ॥

पाँच जो रातें क़दूर की लाया है रमज़ान ।  
ये हैं इबादत के लिये इनकी बड़ी है शान ॥

दीने बरहक जाने मन ऐ मेरे इसलाम ।  
मेरे बद आमाल ने तुझ को किया बदनाम ॥

जुल्मो सितम चंगेज़ का आ के हुआ आबाद ।  
इश्के नबी जब कम हुआ टूट गया बग़दाद ॥

अपने लिये रौशन क़बा पाता है हर रोज़ ।  
सूरज ताज़ा रौशनी लाता है हर रोज़ ॥

क़दम-क़दम अफ़लाक से नीचे उतरती शाम ।  
आने वाली एक नई सुब्ह का है पैग़ाम ॥

دین برحق جان من اے میرے اسلام  
میرے بد اعمال نے تجھ کو کیا بدنام



ظلم و ستم چنگیز کا آ کے ہوا آباد  
عشق نبی جب کم ہوا ٹوٹ گیا بغداد



اپنے لیے روشن قبا پاتا ہے ہر روز  
سورج تازہ روشنی لاتا ہے ہر روز



قدم قدم افلاک سے نیچے اترتی شام  
آنے والی اک نئی صبح کا ہے پیغام



باغ عنایات و کرم رحمت کا گلخان  
فضل رب سے میں نے پھر پایا ہے رمضان



پھول خوشی کے کھل اٹھے سب پہ ہوا فیضان  
نور کی لے کر بارشیں آیا ہے رمضان



افطار و سحری کی ہے چاروں جانب دھوم  
رات میں دن کی روشنی ہوتی ہے معلوم



پانچ جو راتیں قدر کی لایا ہے رمضان  
یہ ہیں عبادت کے لیے ان کی بڑی ہے شان



جب بھی پوچھوں بس یہی کہتا ہے ادراک  
سارے ولیوں کے ولی میرے وارث پاک



عشق نبی کا آئینہ زیت کے سارے باب  
بزم ولا کا چاند ہیں میرے شہ نواب



شب بھر ذوق و شوق سے کر کے عبادت سوچ  
کیوں دی ہے اللہ نے شب براءت سوچ



بات یہ میری مان لے تو جو نہیں آگاہ  
شب براءت ہے تری بخشش کی اک راہ





باغ ولایت کے شجر سب ہیں سایہ دار  
فیض اٹھاتے ہیں سبھی اپنے ہوں یا اغیار



عبد القادر کے قدم ولی کی گردن پاتے  
ان کی گلی کا ہر گدا عارف حق کہلاتے



حرف حق کی روشنی جان دین متین  
دھڑکن اہل عشق کی خواجہ معین الدین



بانٹ رہا ہے جنتیں ایک ٹکے کے مول  
عاشق شاہ دوسرا اک دانا بہلول



آل نبی کے عشق کی پاؤں میں ہے زنجیر  
تجھ پر میں سو جان سے فدا مری تقدیر



میرے آقا نے کہا جو ہیں شہ کوئین  
جنت کے دو پھول ہیں میرے حسن حسین



اک اک مصرع عشق کا لگتا ہے دیوان  
کیا کیا نعتیں کہہ گیا آقا کا حسان



ان کے صحابہ ہیں کہ ہیں روشن تارے سوچ  
ان کے جمال و حسن کو عقل کے مارے سوچ



نام علی مرا تیر ہے نام علی تلوار  
سوچ لے ظالم سوچ لے ہوگی تیری ہار



کرتے ہیں شام و سحر علی کا ورد  
ہے جان شمس و قمر علی کا ورد



علی کے بیٹوں کا گدا ہونا میری شان  
تاج مرے سر کا یہی یہی مری پہچان



دیکھے اصغر کی ہنسی دیکھے چلتا تیر  
جو بھی جاتے کربلا بن جاتے تصویر



دین کی وسعت کے بنے ان سے ہی اسباب  
عدل کا اور انصاف کا عمر بنے مہتاب



عشق شہ کونین ہی جن کا ہے ایمان  
لقب سے ذوالنورین ہیں نام سے ہیں عثمان



نام علی شیر خدا اور حیدر کرار  
خوف سے کانپے کفر کے سارے ہی سردار



علی علی کرتے رہو دن ہو یا ہو رین  
ذکر علی سے پاؤ گے دامن بھر کر چین



دھوپ لگے کی چاندنی سنگ لگے گا پھول  
 خلد اگر ہو دیکھنی دیکھو شہر رسول



ٹوٹی پھوٹی روشنی ٹوٹی پھوٹی رات  
 خواب مدینہ جاگ جا نور کی کر برسات



جنت کا احساس دے شہر نبی کی بھور  
 رقص طبیعت یوں کرے جیسے ناپے مور



صدق و صفا کا آئینہ آقا کے ہیں یار  
 یعنی مرے بوبکر ہیں عشق کا اک اوتار



سارے شہروں سے حسین سارے جہاں کا چین  
آنکھ کا میری نور ہے شہر شہ کو نین



گنبد خضرا سے رواں نور کا دریا دیکھ  
دل کی آنکھیں کھول کے کیا ہے مدینہ دیکھ



یاد مدینہ کی گھڑی ماں کی ہے آغوش  
جس کو مقدر سے ملے ہو جائے مدہوش



تجھ سے ہے یہ التجا طیبہ کی تصویر  
سینے میں پیوست کر ترکش کے سب تیر



خاکِ مدینہ چومتا شام کو آکر چاند  
روشن اس کے بعد ہو دامن بھر بھر چاند



ہجرِ مدینہ کے سبب آیا یہ ہنگام  
ہر دم رونا پیٹنا عشق کا ٹھہرا کام



دل میں مرے آباد ہے ان کا دیار خیر  
میری تمنا رات دن کرتی وہاں کی سیر



حسن میں اپنے بے بدل روشن اور مسعود  
ہر مومن کے دل میں ہے شہرِ نبی موجود



منظر میرے شہر کا جیسے ہو تیزاب  
آنکھوں کی ہے آرزو شہر نبی کا خواب



ہر دنیا کی ہے خبر مانو میرے یار  
ذره طیبہ کا ہے یہ پڑھ لو یہ اخبار



طیبہ کے اک موڑ پر بیٹھا اک مزدور  
دیکھے حسرت سے اسے جنت کی اک حور



ہوئی بہت ہیں لغزشیں ہوئی بہت تقصیر  
شہر نبی کی ساعتو! کر لو مجھے زنجیر





زیست کے جیسے میل ہوں جیسے ہوں فرسنگ  
میری اک اک سانس ہونعت نبی کے سنگ



چلتے رہنا چاہیے سوتے شہر رسول  
یوں کرنے سے دوستو زیست بنے گی پھول



روتے رہنا رات دن شہر نبی سے دور  
میرے بس میں کچھ نہیں کتنا ہوں مجبور



طیبہ تو نے ڈال دی پیروں میں زنجیر  
ورنہ ایسی تھی کہاں میری یہ تقدیر



بدر و احد احزاب یا خیبر کی ہو جنگ  
وہاں بھی آقا تھے مرے رحم و کرم کے سنگ



فتح مکہ کی گھڑی اہل خرد حیران  
عام معافی کا ہوا آقا کا اعلان



بستہ زنجیر و رسن کر کے میرے یار  
جلدی مجھ کو لے کے چل پیش شہ ابرار



کہتا زبان حال سے ہر کرمک شب تاب  
سرور دیں کے فیض سے جسم ہوا مہتاب



جکڑ کے رسی سے بدن کر کے مجھے مجبور  
پاؤں میں بیڑی ڈال کے لے چل ان کے حضور



ختم نبوت ہوگئی میرے نبی کے بعد  
کوئی نہ آئے گا نبی میرے نبی کے بعد



روشن ہے یہ کس قدر سیرت کا ادھیائے  
قیدی کی تکلیف بھی ان سے نہ دیکھی جائے



جیسے بھی رکھیں مصطفیٰ مجھ کو ہے منظور  
میری یہ ہے آرزو ان سے نہ جاؤں دور



ان کا بستر بوریا ان کا تکیہ اینٹ  
راج کریں کونین پر پہنیں ہلکی چھینٹ



بات ہے نازک پھول سی حرف گہر انمول  
موم بنادیں سنگ کو ان کے میٹھے بول



آئینہ قرآن کا ان کی صبح و شام  
ان کی پوری زندگی حرف حق کے نام



ان کی مدحت رات دن میرا ہے مقصود  
کیسے ہوگی کامراں فکر مری محدود



شاہ ام احساس کا پہنے ہیں ملبوس  
سب کے درد و کرب کو کرتے ہیں محسوس



رب کے جو محبوب ہیں جن کی ساری خدائی  
تکیہ ان کا اینٹ کا بستر ٹوٹی چٹائی



دیکھ کے ان کا آئینہ اپنی حقیقت جان  
تجھ میں چھپا جیوان ہے یا کوئی انسان



حرف و نوا کا قافلہ پہنچا نبی کے دوار  
عجز کا کرنے کے لیے آقا سے اظہار



گنبد خضرا کے تلے پاؤں اگر اک شام  
آئے یقیں کی روشنی بھاگیں سب اوہام



دشت تمنا پر مرے خوب کرم برسائے  
آنکھیں جب بھی بند ہوں نظر مدینہ آئے



گنبد خضرا اور میں جیسے چاند چکور  
آنکھیں کہتی ہیں مری کاش نہ ہو اب بھور



غیب عطائی آپ کو حاصل ہے سرکار  
اپنے عمل سے جا بجا کیا ہے یہ اظہار



مخمل جیسا بوریہ ریشم جیسا ٹاٹ  
سب سے الگ سب سے جدا شہر کی ان کے ہاٹ



دنیا بھر سے ہو گیا دل اب میرا اچاٹ  
آقا اپنے شہر میں کٹیا کر دیں الاٹ



کوئے نبی کے رات دن آنکھیں دیکھیں خواب  
کاش یہی ہر پل کہیں میرے سبھی احباب



عشق نبی کا نور ہے سینے میں موجود  
تاک رہی ہے اس طرف تیرہ شبی بے سود



ان کے اشارے پر چلے ان کا گدا کہلاتے  
سورج ان کے واسطے پیچھے پلٹ کر آتے



دنیا میں سرکار کا دیوانہ کہلاؤں  
حشر میں سوتے خلد میں ان کے پیچھے جاؤں



زوجہ ان کی عائشہ فاطمہ ان کا پھول  
وہ ہیں حبیب کبریا میرے پیارے رسول



عائشہ ماں کے تاج سر جان خدیجہ آپ  
فاطمہ زہرا کے پدر میرے آقا آپ





آقا کا کردار ہے نکہت عالم گیر  
کھینچ سکو تو کھینچ لو خوشبو کی تصویر



جن کو غربت کے سبب ہاتھ نہ کوئی لگائے  
آقا کی آغوش میں وہ بھی بچے آئے



عشق نبی کے جام سے سنگ بنے انمول  
بھولے فطرت خاں سی پھول بنے منگول



پیڑ اشارے پر چلے سنگ کرے تصدیق  
ایسے مرے سرکار ہیں کرلو تم تحقیق



ذکر شہ کو نین ہے سب سے اچھا گیت  
بات یہ میری یاد رکھ میرے من کے میت



پتھر پتھر زندگی کرنے والے لوگ  
ان کے صدقے ہو گئے خوشحالی کے یوگ



تیرا بیٹا آمنہ سر تا پا ہے نور  
بھاگے اس کے نام سے تیرہ بختی دور



رحمت ان کا تاج ہے لطف و کرم پہچان  
کرتے رہنا درگزر آقا کی ہے شان



ان کا کہا رب کا کہا کہتا ہے قرآن  
عقل و خرد کی سن نہ تو ان کا کہنا مان



ان کے لیے قد جائم آیا ہے مضمون  
ان کی عظمت کا بیاں یسین طہ نون



کفر کی شمشیریں گریں ٹوٹ گئے سب تیر  
اٹھی نگاہ مصطفیٰ پھیل گئی تنویر



جب سے بسایا آسماں جب سے پایا وجود  
سارے ملائک ہر گھڑی پڑھتے رہیں درود



چاند ستاروں کے دیے جلتے ان کے دوار  
وہ ہیں محمد مصطفیٰ نبیوں کے سردار



بار بار مضمون یہ قلم کرے تحریر  
نور سراپا آپ ہیں کیسے بنے تصویر



حرف و نوا حسن نبی کر نہ سکے زنجیر  
سب کے عاجز ہیں قلم غالب ہوں یا میر



چاند کے دو ٹکڑے کریں بدلیں وہ تقدیر  
ان کی مرضی سے بنے شاخ شجر شمشیر



ہوتے نہیں حل مسئلے کیا بہت ہی غور  
ایک نگاہ لطف ہو میرے آقا اور



گنبد خضرا کے مکین رب کے پیمبر آپ  
خلق خدا کے واسطے ہادی و رہبر آپ



جیسے چومے آسماں تان سین کی تان  
سنتے ہی نام نبی اڑنے لگیں ارمان



میرے آقا مصطفیٰ سارے جہاں کی جان  
خلق و محبت میں ہوتے سب سے بڑے دھنوان



نعت کہی ہے شوق سے آقا کریں پسند  
کاش ہو ایسا اور دل پائے خوشی دو چند



آپ کی چشم لطف سے رہ نہ سکیں گے دور  
آقا در پر ہیں کھڑے دنیا کے مجبور



ذکر نبی کے گلی گلی جلتے رہیں چراغ  
جائے اجالا دور تک روشن رہیں دماغ



حضور عقبی ہیں مری دنیا میری حضور  
رنج و الم ہیں اس لیے مجھ سے کافی دور



عاشق شاہ دوسرا سارے اچھے لوگ  
ان کے دشمن ہوتے ہیں کیسے کیسے لوگ



پھول بچھا کر خاک پر کہتا ہر سنگھار  
نعت ہے میری زندگی نعت مرا سنسار



جو ہے حبیب کبریا طیبہ کی ہے شان  
نور ہے خاکی جسم وہ کہتا ہے قرآن



مجھ کو کہاں معلوم تھا ہوگی کیسے قبول  
ان کے صدقے ہو گئی میری دعا مقبول



ان کی مرضی سے جڑے رب کی رضا کے تار  
سوچو کیا ہیں مصطفیٰ سوچو میرے یار



پھر سے کہو ہاں پھر کہو بار بار دہراؤ  
اسم نبی کی روشنی دنیا میں پھیلاؤ



دنیا بھر کی الجھنیں گھیرے ہیں سرکار  
بنتی ہے یہ آپ سے کر دیں بیڑا پار



بکھرا دے گی ہر طرف نعت نبی تصویر  
میرے غم خانے کی بھی بدلے گی تصویر





ان کا مکاں عرش بریں ان کے گدا جبریل  
ان کی ساری منزلیں ان کے سارے میل



بات چھڑی سرکار کی میرے دل کی اور  
اس سے کچھ مطلب نہیں سا بچھ ہوئی یا بھور



دل کے نازک چھور پر لگے جو کوئی تیر  
ان کے کوچے کی ہوا بنتی ہے اکسیر



سب سے اچھی شخصیت میرے شہ ابرار  
کوئی نہ رد کر پائے گا میرا دعوی یار



عصیاں کا دفتر کھلا حشر کا ہے ہنگام  
 کر دیں اشارا مصطفیٰ بنا دیں میرا کام



ان کا روضہ دیکھ کر آنکھیں ہیں سرشار  
 کیا ہے اس سے بھی حسین جنت میرے یار



یاد مدینہ آج بھی دیتی ہے جھک جھور  
 پھر سے جانے کے لیے دل کرتا ہے شور



صدق و صفا اور خلق کی پہنے ہوئے دستار  
 بارہ ربیع النور کو آئے مرے سرکار



چاہے جیسا وقت ہو جیسے ہوں حالات  
گنبد خضرا کی طرف دیکھوں میں دن رات



رحمت کی نظروں سے جب دیکھیں گے سرکار  
رنج و غم مٹ جائیں گے ہوگا بیڑا پار



گنبد خضرا نام کا ہرا ہرا ہے پھول  
گود میں جس کی نحو خواب آقا میرے رسول



چاند ستاروں کی ڈگر چلتے رب کے حبیب  
ان کے در کا ہوں گدا اتنا اچھا نصیب



ترکی شام اور سیریا دیکھ کے سب گھبراتے  
یارب ایسا زلزلہ اب نہ کہیں بھی آئے



چاہنے والوں سے ترے دنیا رکھے بیر  
مانگ رہا ہوں میرے رب تجھ سے سب کی خیر



عیسیٰ کا اعلان ہے آتے گا ایسا نور  
کفر کی اور الحاد کی شب ہوگی کافور



چھیڑی جب سرکار نے رحم دلی کی جنگ  
خاک اوڑھی اور سو گئے ظلم کے سب اورنگ



بستر میرا خاک ہے پردہ میرا ٹاٹ  
اتری یارب زندگی رنج و الم کے گھاٹ



خواب وہ دیکھوں ایک دن میرے رب قدیر  
شہر نبی کی دید ہی جس کی ہو تعبیر



نعت نگاری میں مجھے ہونا ہے معروف  
میرے خدا افکار کو میرے کر مصروف



مرنے سے پہلے کر عطا مجھ کو یہ سوغات  
مانگ رہا ہوں اے خدا طیبہ کی اک رات



علاج کرنا اور دعا بس ہے ایک اپائے  
میرے خدا کا حکم ہی شفا عطا فرمائے



دل کے دھڑکنے کی صدا کرتی ہے تسلیم  
آمد و شد انفاس کی فضل رب کریم



یارب تجھ سے ہے دعا کردے بیڑا پار  
مسکن خوشیوں کا بنے میرا گھر سنسار



صدقے میں سرکار کے لطف و عنایت بھیج  
دینی بچوں کے لیے اپنی رحمت بھیج



میرا رب ہی جانتا اپنے سارے کام  
شام کو کر دے صبح وہ صبح کو کر دے شام



یا اللہ و یا حکم یا نافع یا نور  
دل ہے بچھا در پر ترے سر خم تیرے حضور



نام ترا اللہ ہے صفت تری رحمان  
عفو و معافی در گزر یارب تیری شان



کوہِ فاراں ہے ترا تیرا کوہِ طور  
جنتِ دوزخ ہیں تری تیرے علماں حور



رکھا ہے جب بھی کسی نئی بحر یا صنف کو استعمال کرنا چاہا تو ہمیشہ سب سے پہلے نعت و مناقب میں ہی استعمال کیا۔ میں سمجھتا ہوں کہ یہ مجھ پر میرے آقائے کریم علیہ الصلوٰۃ والتسلیم اور بزرگان دین رضی اللہ عنہم اجمعین کا مخصوص کرم ہے اس کے سوا کچھ نہیں۔

دو ہانگاری میں میری سب سے زیادہ حوصلہ افزائی میرے محسن و کرم فرما حضرت سید محمد نور الحسن نور نوابی عزیز، خانقاہ عالیہ نوابیہ ابو العالیہ، قاضی پور شریف کھاگا ضلع فتح پور (ہسواہ) نے کی بلکہ یہ کہوں تو بجا ہوگا کہ وہ ہمیشہ مجھے شعر گوئی خصوصاً نعت و منقبت نگاری کے لیے انگیز کرتے رہتے ہیں۔ اس بیماری کے عالم میں بھی میں جو شعر گوئی کر رہا ہوں اس کی ایک بڑی وجہ ان کی حوصلہ افزائی ہی ہے۔ اللہ ان کی عبرت و عظمت میں روز افزوں اضافہ فرمائے۔ آمین

حضرت سید محمد مجیب الحسن مجیب نوابی عزیز نے بڑا کرم کیا کہ میری دو ہانگاری پر ایک مبسوط مضمون سپرد قلم کر کے مجھے استناد بخشا۔ میں بہ صمیم قلب ان کا شکر یہ ادا کرتا ہوں اور دعا گو ہوں کہ اللہ تعالیٰ انہیں اپنے مخصوص کرم سے نوازے۔ آمین

میں اپنے تمام قارئین، دوستوں، عزیزوں، رشتہ داروں، اپنے بیٹوں، بیٹیوں اپنی اہلیہ اور خصوصاً مولانا قاری محمد قاسم جیلپی برکاتی کا شکر گزار ہوں کہ وہ میری تخلیق کو سینے سے لگاتے ہیں دل میں جگہ دیتے ہیں اور مجھے دعاؤں سے نوازتے ہیں۔

میری یہ کاوش ”وادی ماہ“ بھی ہمیشہ کی طرح دبستان نوابیہ عزیز یہ پبلیکیشنز قاضی پور شریف کھاگا فتح پور (ہسواہ) کے پلیٹ فارم سے ہوتی ہوئی آپ کے ہاتھوں کی زینت ہے۔ اللہ پبلیکیشن کو دن دو دن رات چوگنی ترقی عطا فرمائے۔ آمین

میری بس ایک آرزو ہے کہ میری اس کاوش کو میرے آقا کریم ﷺ اور بزرگان دین رضی اللہ علیہم اجمعین قبول فرمائیں۔ اور میرا رب اسے میری اخروی نجات کا ذریعہ بنائے۔

یا وروارثی عزیز نوابی



## دوہا اور میں

دوہا ہندی زبان کی وہ صنف سخن ہے جس کے بطن میں ہر قسم کے مضامین موجود ہیں۔ کبیر داس اور دیگر کویوں نے عوام الناس کی اصلاح کے لیے خوب خوب دوہے کہے۔ دوہے آسان زبان میں کہنے کا سبب ہی یہی تھا کہ ان کی رسائی عوام تک ہو سکے۔ اگر ایسا نہ کیا جاتا تو اس کا مقصد ہی فوت ہو جاتا۔

تعلیم کے دوران میں نے بھی دوسرے طلباء کی طرح دوہوں کا مطالعہ کیا لیکن اس وقت مقصد ظاہر ہے امتحان میں کامیابی سے زیادہ کچھ نہ ہوتا تھا لیکن جیسے جیسے شعور بیدار ہوتا گیا مجھے دوہے کی صنف سے ایک عجیب سا انس ہوتا گیا۔ مجھے اس کی سحر بہت اچھی لگتی تھی پڑھنے میں بڑا لطف آتا تھا۔ جب میں نے شعر و سخن کی دنیا میں قدم رکھا تو مجھے دوہا پڑھنے میں مزید لطف ملنے لگا۔ اس دور میں میں نے حضرت امیر خسرو کے دوہوں سے بھی حظ حاصل کیا۔ حضرت امیر خسرو رحمۃ اللہ علیہ کے دوہوں کے مطالعہ کا یہ بھی اثر ہوا کہ میں ایک آدھ مصرعے کہنے لگا لیکن باقاعدہ دوہا نگاری کا کبھی خیال نہ آیا۔

۲۰۲۳ء کے ابتدائی ایام میں وہ دن میرے لیے یادگار دن بن گیا جب میں نے پہلی بار دوہا کہا۔ مجھے یہ تو یاد نہیں کہ وہ کون سا دوہا تھا لیکن پھر یوں ہوا کہ بہت جلد کچھ دوہے میری زنبیل قرطاس و قلم کے سپرد ہو گئے۔

مستقل بیماری نے مجھے اس میدان میں بہت آگے تک جانے نہ دیا۔ اب ایسا لگتا ہے کہ عمر کی اس منزل پر شاید میں اس سے زیادہ کام نہ کر سکوں۔ لہذا فیصلہ کیا کہ جو کچھ دوہے ہو گئے ہیں انہیں ستابی شکل میں پیش کر دوں۔

ایک اور بات بیان کرتا چلوں۔ میں نے جب سے شعر و سخن کی دنیا میں قدم

امور کو ذہن میں رکھنے کے بعد اگر آپ علم عروض کی کام چلاؤ حد تک بھی جان کاری رکھتے ہیں تو موزوں اور غیر موزوں دوہے کی شناخت میں آپ کو کوئی کٹھنائی نہیں ہوگی۔ اب ہم وادی ماہ کی جانب لوٹتے ہیں۔ حضرت یاور نے صرف دوہے کی ہیئت کو ہی نہیں استعمال کیا بلکہ اس کے لسانی مزاج کا بھی بھرپور خیال رکھا ہے۔ آپ کو اس کتاب میں کہیں بھی نقلی الفاظ نظر نہیں آئیں گے۔ دوہے جیسی صنف جس کا مقصد ہی یہ تھا کہ عوام تک اپنی بات پہنچائی جائے وہ بھلا بھاری بھر کم الفاظ کی متحمل کیوں کر ہو سکتی ہے۔ اگر جدت طرازی کی بات کی جائے تو یاور صاحب دوہے لکھتے ہوئے بھی اپنی لے میں نظر آتے ہیں۔ وادی ماہ کی کہکشاؤں میں آپ کو یہ مطلق احساس نہیں ہوگا کہ اس صنف میں مصنف کی یہ پہلی کاوش ہے۔ میں نے یاور صاحب کے دوہوں میں زبان سادہ برتے جانے کی بات کی ہے تو پھر ثبوت بھی مجھے ہی دینا ہے

بات چھڑی سرکار کی میرے دل کی اور

اس سے کچھ مطلب نہیں سا نچھ ہونی یا بھور

ایک اور دوہا پڑھ لیجیے صرف سلاست زبان ہی نہیں بلکہ ندرت خیال کی بھی داد دیجیے

جیسے چومے آسماں تان سین کی تان

سنتے ہی نام نبی اڑنے لگے ارمان

اس سے زائد مثالیں پیش کر دوں تو آپ کے لیے کیا رہ جائے گا؟ الغرض دوہا عوامی چیز ہے اور اسے غیر اردو داں طبقے تک پہنچانے کے لیے ہندی رسم الخط میں بھی طبع کیا جا رہا ہے۔ اب دیکھنا یہ ہے کہ اس قسم کی اور کوئی کتاب شایع ہوتی ہے یا نہیں ہاں مگر اولیت کا سہرا تو جناب یاور کے سر ہی رہے گا۔



کے مقامات سے تو آگاہ ہو جائیں۔ دوہا نگاری کے حوالے سے بالاجمال گذشتہ سطور میں ذکر کر دیا گیا ہے۔ اور اس کی بحر کے مشہور ارکان بھی لکھ دیے گئے ہیں۔ اب کوئی کہے کہ پھر اس دوہے کے ارکان کے بارے میں کیا ارشاد ہے۔

علاج کرنا اور دعا بس ہے ایک اپائے

میرے خدا کا حکم ہی شفا عطا فرمائے

ارکان اس کے یہ ہیں:

فعل فاعل، فعلن فاعل، فعل فاعل، فعل فاعل،  
فعلن فعلن، فاعلن، فعل فاعل، فعل فاعل

ان ارکان کو شمار کر لیجیے تعداد ۴۸ بنتی ہے اور دوہوں میں اس سے کوئی فرق نہیں پڑتا کہ مصرع فعلن سے شروع ہو رہا ہے یا فعل اور فعل سے۔ جو دوہا سہ حرفی رکن فعل / فعل سے شروع ہوتا ہے اسے وشم کلاتمک دوہا کہتے ہیں اور جس دوہے کی ابتدا میں چار حرفی رکن فعلن آتا ہے اسے سہم کلاتمک دوہا کہتے ہیں اور جو دوہا فعل کے وزن سے شروع ہوتا ہے اس کے لیے چنڈالنی دوہا نامی ڈراونی اصطلاح مستعمل ہے۔ یہ بات بھی قابل ذکر ہے کہ دوہے میں چار چرن یعنی حصے ہوتے ہیں۔ اور اس کا پہلا اور تیسرا جز وشم (طاق) چرن کہلاتا ہے۔ دوسرے اور چوتھے جز کو سہم چرن (جفت) کہتے ہیں۔ طاق جز میں تیرہ اور حصہ جفت میں گیارہ ماترائیں ہوتی ہیں۔ اور ہاں جب دوہے کے دونوں اجزا ایک سطر میں لکھے جائیں تو اسے دل کہا جاتا ہے دل کو ہی اگر مصرع مان لیا جائے تو کوئی مضائقہ نہیں اور یہ تو کوئی بھی سمجھ سکتا ہے کہ دوہے کے دونوں مصرعے غزل کے مطلع کی طرح ہم قافیہ ہوتے ہیں۔ اگر یہ باتیں ذہن نشین ہو گئیں ہوں تو درج بالا دوہے کے ذیل میں دیے گئے ارکان کے حروف ان کے اجزا کے مطابق دوبارہ شمار کیجیے۔ ماترائیں کیا ہوتی ہیں یہ آپ بہ خوبی سمجھ جائیں گے۔ ان

کی کوئی قید نہیں رہی۔ پرانے دوہوں کو پڑھ لیجیے آپ کو ان میں الاهیات، تصوف و عرفان سے متعلق دیگر موضوعات، پند و نصائح، حکایت عشق و عاشقی اور فراقیہ نیز فکاہیہ مضامین بھی ملیں گے۔ اب سوال یہ ہے کہ نعت و مناقب کے اولین نقوش دوہوں میں کہاں سے حاصل کیے جائیں؟ اس کا جواب ہمیں میراں جی شمس العشاق (م ۱۵۵۷ ع) کے اس دوہے میں ملتا ہے

اللہ محمد علی امام دائم ان سوں حال

سب خاصوں میں اللہ اللہ تو رکھوں کیا کمال

(لفظ! کیا کے الف میں اخفا ہے اسے جھٹکے کے ساتھ پڑھیے ورنہ وزن ناہموار ہوا جاتا ہے)

ثابت ہوا کہ دوہے کو نعت و مناقب کے پیراہن خوش رنگ ملنے میں دیر نہیں لگی اور صوفیائے کرام نے اس صنف میں بھی وہی کچھ لکھا جو ان کی غزلوں اور مثنویوں کا خاصہ ہے۔ اس صنف میں یہ تمام خصوصیات ہونے کے باوجود اردو شاعری میں غزل گوئی کے آگے دوہا نگاری اس قدر پھولنے پھلنے نہ پائی جس کی یہ حقدار ہے۔ بہر حال، دیر سویر ہی سہی مگر حق بہ حقدار رسید۔ دور موجود اور ماضی قریب میں تقدیسی دوہے کہنے والوں نے خوب نعتیہ دوہے کہے، جن کی جھلکیاں ہندو پاک کے ادبی رسائل و جرائد میں نظر آتی رہی ہیں لیکن ہماری معلومات کے مطابق اب تک تقدیسی دوہوں پر مشتمل کوئی مستقل کتاب نہیں دیکھنے میں آئی یعنی نہ متفرق شعرا کے نعتیہ/منقبتی دوہے اور نہ کسی ایک شاعر کے تقدیسی دوہوں کا مجموعہ برصغیر ہندو پاک میں شائع ہوا۔ دعائیں دیجیے جناب یاد رکھو کہ انہوں نے کم فرستی اور ناسازی طبع کے باوصف ایک منفرد اور متنوع مجموعہ شائع کیا ہے۔ وادی ماہ کی سیر آپ تنہا ہی کیجیے لیکن اس سے قبل آپ کو تھوڑا بہت لوازمہ بھی فراہم کیا جا رہا ہے کہ آخر جس وادی میں آپ اتر رہے ہیں اس

اردو شاعری میں ملکی تہذیب کی عکاسی کے بارے میں۔ یوں تو اجنبد کلید بت کہہ در دست برہمن کی روایت قدیم دور سے چلی آرہی ہے لیکن دور قدیم کی تخلیقات میں بھی آپ کو برگد اور پپل کی چھاؤں نہیں ملے گی۔ ہاں آپ کو سرو سہی اور بید مجنوں کی بہار و خزاں ضرور دکھائی دے گی۔ بھلا ہو جدید شاعروں کا جنہوں نے خالص ایرانیت سے اپنی جان چھڑائی اور یہ ثابت کیا کہ ہم اب بغیر دیکھے ہی کنار آب رکن آباد و گلگشت مصلّا سے لطف زندگی نہیں حاصل کر سکتے۔ صرف یہی نہیں کہ جدید شعرا نے ہندی دیومالا اور ہندوستانی تہذیب و ثقافت اور دیگر روایات کو کہیں راست انداز میں تو کہیں استعاراتی اور تمسیحی پیرائے میں نظم کیا ہے بلکہ ہندی کی ایک صنف دوہا کی خشک ہوتی رگوں کو بھی تازہ خون فراہم کیا ہے۔ دوہا وہ خوش قسمت صنف شاعری ہے کہ جب صوفیائے کرام نے ہندوستان کی مقامی بولیوں میں شعر گوئی کا آغاز کیا تو سب سے پہلے یہی صنف تھی جس پر ان کی نگاہ ٹھہری۔ اردو زبان و ادب کی کتب تاریخ میں حضور بابا فرید الدین مسعود گنج شکر کا یہ دوہا ملتا ہے

سائیں سیوت گل گئی ماس نہ رہیا دیہہ  
تب لگ سائیں موسیاں جب لگ ہوسوں کیہہ

حضرت امیر خسرو کے دو مصرعوں کو زیادہ تر لوگوں نے محض ہندوی کی ایک بیت لکھا ہے لیکن غور کیجیے تو یہ بھی دوہا ہی ہے

گوری سووے سچ پر مکھ پر ڈارے کیس  
چل خسرو گھر آپنے رین/سا نچھ بھئی چہوں دیس

یہ دوہا اسی اڑتالیس ماترائی اردھ سم (نیم مساوی) چھند میں ہے جس کا متبادل اردو کے عروض کی یہ بحر ہے اور اس بحر کو دوہوں کے لیے مختص سمجھا جاتا ہے۔ ارکان حسب ذیل ہیں، فعلن فعلن فاعلن فعلن فاع، دوہوں کے لیے کسی بھی زمانے میں مضامین

## یاور کی دوہانگاری

سید محمد مجیب الحسن مجیب نوابی  
خانقاہ نوابیہ قاضی پور شریف، کھاگا، ضلع فتح پور

قدیم اردو شاعری اس حوالے سے مطعون رہی ہے کہ اس میں علاقائی اور ملکی تہذیب و تمدن کے عناصر بہت کم نظر آتے ہیں۔ اس ضمن میں معترضین کا یہ اعتراض بجا ہے کہ ہم گل و بلبل کے فرضی افسانہ عشق سے مخلوط ہوتے ہیں لیکن آم کی ڈالی پر بیٹھی کوئل کی درد بھری کوک نہیں سننا چاہتے۔ اس کے علاوہ مشہور دریاؤں کے بھی متبادل پیش کیے جاتے ہیں کہ فرات و جیحون کے علاوہ گنگا اور جمنا کی لہریں ہماری شاعری کو کیوں سیراب نہیں کر پائیں؟ بات یہ نہیں ہے کہ ہندوستانی تہذیب کی عکاسی کلاسیکی اردو شاعری میں نہیں دکھائی پڑتی بلکہ بات تو یہ ہے کہ اگر کوئی اس قسم کی کوشش کر بھی لے تو اس کی کتنی حوصلہ افزائی ہوئی ہے؟ مثلاً حضرت محسن کا کوری کا لاجواب قصیدہ لامیہ ”سمت کاشی سے چلا جانب متھر ابادل“ کے ساتھ خدائی فوج داروں نے کیا سلوک کیا؟ کیا انہیں قصیدے کی تشبیب کچھ سمجھ میں بھی آئی؟ جواب ہوگا ”بالکل بھی نہیں“ مسئلہ یہ ہے کہ شاعری پر بھی مذہبی انتہا پسند افراد اپنا تسلط چاہتے ہیں اور کسی بھی انتہا پسند طبقے سے آپ ہوش و خرد کی باتوں کی توقع کیسے کر سکتے ہیں؟ ہاں تو بات چلی تھی

## انتساب

گوری سووے سبج پر مکھ پر ڈارے کیس  
چل خسر و گھر اپنے رین بھئی چہوں دیس

کے خاق

حضرت امیر خسرو  
رحمۃ اللہ علیہ

کے نام

یاور وارثی عزیز ی نوابی

جملہ حقوق بحق پبلشر محفوظ

نام کتاب :	وادی ماہ (دوہوں کا مجموعہ)
نام شاعر :	یاور وارثی عزیز ی نوابی
انتخاب :	نجم السعید، رضوان عارف
ترتیب :	یاور وارثی عزیز ی نوابی
کمپوزنگ :	اسمائ گرافکس، چمن گنج کانپور
تعداد :	فون نمبر 9455306981
صفحات :	پانچ سو (۵۰۰)
ناشر :	88
مطبع :	دبستان نوابیہ عزیز یہ پبلکیشنز
قیمت :	اسمائ گرافکس، چمن گنج۔ کانپور
سن اشاعت :	125/-
	2023

ملنے کے پتے:

1- آستانہ عالیہ نوابیہ قاضی پور شریف، پوسٹ منڈوہ، ضلع فتحپور (ہسوہ)

پو. پی. (انڈیا) پین کوڈ- 212653

2- اسمائ گرافکس- 105/219، تارا بلڈنگ- چمن گنج- کانپور- 208001

برائے رابطہ

+919415494492

+919426268823

+918866222412

+919726880001



دوہوں کا مجموعہ

تقدیمی دوہے

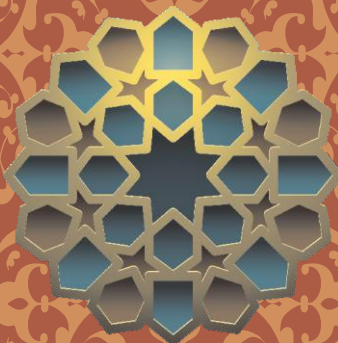
وادیٰ ماہ

وادیٰ ماہ و کہکشاں خوشی کی فصلیں بوئے  
ان کی گلگی کی خاک سے اتنی روشن ہوئے

یاوروارثی عزیزینو ابی

تقدیر سی دوسہ

وَاللَّيْمَاتُ مَأَلَمٌ



یا اورد و اذی عن ربی ثی نوری